FULL STOP - 39

अव्यक्त बापदादा (12.01.1984) :-

➳ _ ➳ आज आवाज से परे रहने वाले बाप आवाज की दुनिया में आये हैं सभी बच्चों को आवाज से परे स्थिति में ले जाने के लिए। क्योंकि आवाज से परे स्थति में अति सुख और शान्ति की अनुभूति होती है। आवाज से परे श्रेष्ठ स्थति में स्थित होने से सदा स्वयं को बाप समान सम्पन्न स्थिति में अनुभव करते हैं।

➳ _ ➳ आज के मानव आवाज से परे सच्ची शान्ति के लिए अनेक प्रकार के प्रयन्त करते रहते हैं। कितने साधन अपनाते रहते हैं। लेकिन आप सभी शान्ति के सागर के बच्चे शान्त स्वरुप, मास्टर शान्ति के सागर हो। सेकण्ड में अपने शान्ति स्वरुप की स्थिति में स्थित हो जाते हो। ऐसे अनुभवी हो ना।

➳ _ ➳ सेकण्ड में आवाज में आना और सेकण्ड में आवाज से परे स्वधर्म में स्थित हो जाना - ऐसी प्रैक्टिस है? इन कर्मेन्द्रियों के मालिक हो ना। जब चाहो कर्म में आओ, जब चाहो कर्म से परे कर्मातीत स्थिति में स्थित हो जाओ। इसको कहा जाता है अभी-अभी न्यारे और अभी-अभी कर्म द्वारा सर्व के प्यारे। ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर, रुलिंग पावर अनुभव होती है ना।

➳ _ ➳ जिन बातों को दुनिया के मानव मुश्किल कहते वह मुश्किल बातें आप श्रेष्ठ आत्माओं के लिए सहज नहीं लेकिन अति सहज है। क्योंकि मास्टर सर्वशक्तिवान हो। दुनिया के मानव तो समझते यह कैसे होगा! इसी उलझन में बुद्धि द्वारा, शरीर द्वारा भटकते रहते हैं और आप क्या कहेंगे? कैसे होगा -यह संकल्प कभी आ सकता है? कैसे अर्थात् क्वेश्चन मार्क। तो कैसे के बजाए फिर से यही आवाज निकलता कि ऐसे होता है। ऐसे अर्थात् फुलस्टाप। क्वेश्चन मार्क का बदलकर फुलस्टाप लग गया है ना।

➳ _ ➳ कल क्या थे और आज क्या हो! महान अन्तर है ना। समझते हो कि महान अन्तर हो गया। कल कहते थे ओ गाड और आज ओ, के बजाए ओहो कहते हो। ओहो मीठे बाबा। गाड नहीं लेकिन बाबा। दूर से नजदीक में बाप मिल गया।

➢➢ Self Induljence

➳ _ ➳ भोग विलासिता में डूब जाना

→ इस मार्ग में कभी तृप्ति का अनुभव नहीं होता

- तृष्णा हमेशा बडती ही जाती है
- तृष्णा तृष्णा को जन्म देती है
- इच्छाओं का स्वभाव ही है :- अतृप्ति (Dissatisfaction)
- एक अंतराल के बाद फिर से कामना जागती है
- Once More की कामना हमेशा बनी रहती है

➢➢ Self Control / Controlling Power

➳ _ ➳ आत्म अनुशासन / आत्म संयम / इन्द्रियों पर शासन करना

→ द्वापर युग से मानव का पतन होने का कारण है :-

- संयम की कमी

→ असंयम की सीमा है

- संयम की कोई सीमा नहीं
- आप पूरी ज़िन्दगी बिना लड्डू खाए जी सकते हो

→ Natural (Uncooked) वस्तुएं Addictive (व्यसनकारी) नहीं होती

- आम के सीजन के बाद आम खाने की इच्छा नहीं होती
- गुलाब जामुन 10 दिन खाने के बाद .. 11वें दिन न मिले तो ... हम उसे मिस करते हैं
- Prepared वस्तुओं में Addiction होती है
- Cooked वस्तुएं व्यसनकारी होती हैं

→ संयम 5 बातों में चाहिए

- रूप / Seight
  - Out Of Seight… Out Of Mind
  - जहां हमारी नज़र जाती है... वहाँ हमारी Energy जाती है...
  - जो आँखों से हट गया, वो मन से भी हट जाता है...
- रस / Taste
  - भूख को वश में किये बिना ब्रह्मचर्य का पालन नहीं हो सकता
  - जीभ से बहुत ज़बरदस्त माया आती है.. योगी को एक दम से चारों खाने चित कर देती है ?
  - स्वयं से पूछें की क्या मन खाने के लिए जी रहा हूँ ? या जीने के लिए खा रहा हूँ ?
  - Make Your Diet, Your Medicine… Otherwise Your Medicine Will Become Your Diet…
- गंध / Smell
  - सुगंध के प्रति बहुत अधिक प्रेम और दुर्गन्ध के प्रति बहुत अधिक घृणा योगी के लक्षण नहीं है...
  - योगी सदैव स्थिर रहता है
- स्पर्श / Touch -
- शब्द / Sound -
  - सांसरिक गीतों में आसुरी वाइब्रेशन होते हैं

➢➢ Self Ruling / Ruling Power

➳ _ ➳ आतम नियंत्रण